छोटा भाई और छोटी बहन

छोटा भाई और छोटी बहन अपनी निर्दयी सौतेली माँ से दूर भाग जाते हैं. परंतु उन्हें पता नहीं है कि नीच बूढ़ी औरत एक जादूगरनी है जो उनके पीछे जंगल में आ जाती है. जंगल में बहते पानी के झरनों पर वह जादू कर देती है. प्यास बुझाने के लिए छोटे भाई ने एक जादुई झरने का पानी पी लिया और हिरण बन गया. छोटी बहन रोने लगती है. वह निर्णय लेती है कि अपने भाई के वह सदा देखभाल करेगी. वह उसे लेकर जंगल के एक छोटे घर में रहने लगती है. कई वर्ष बीत जाते हैं.

एक दिन राजा उस जंगल में शिकार करने आता है. भोंपू की आवाज़ें और कुत्तों का भोंकना और शिकारियों की पुकार सुन कर छोटा हिरण भी जंगल में आ जाता है. इस तरह उनके शांत जीवन का अंत हो जाता है. छोटी बहन का राजा से विवाह हो जाता है और वह रानी बन जाती है. उनकी दुष्ट सौतेली माँ क्रोधित होकर एक षड्यंत्र रचती है.

अंत में सच्चाई और प्रेम की जीत होती है. ग्रिम भाइयों की यह परिकथा बच्चों को रोचक लगेगी.
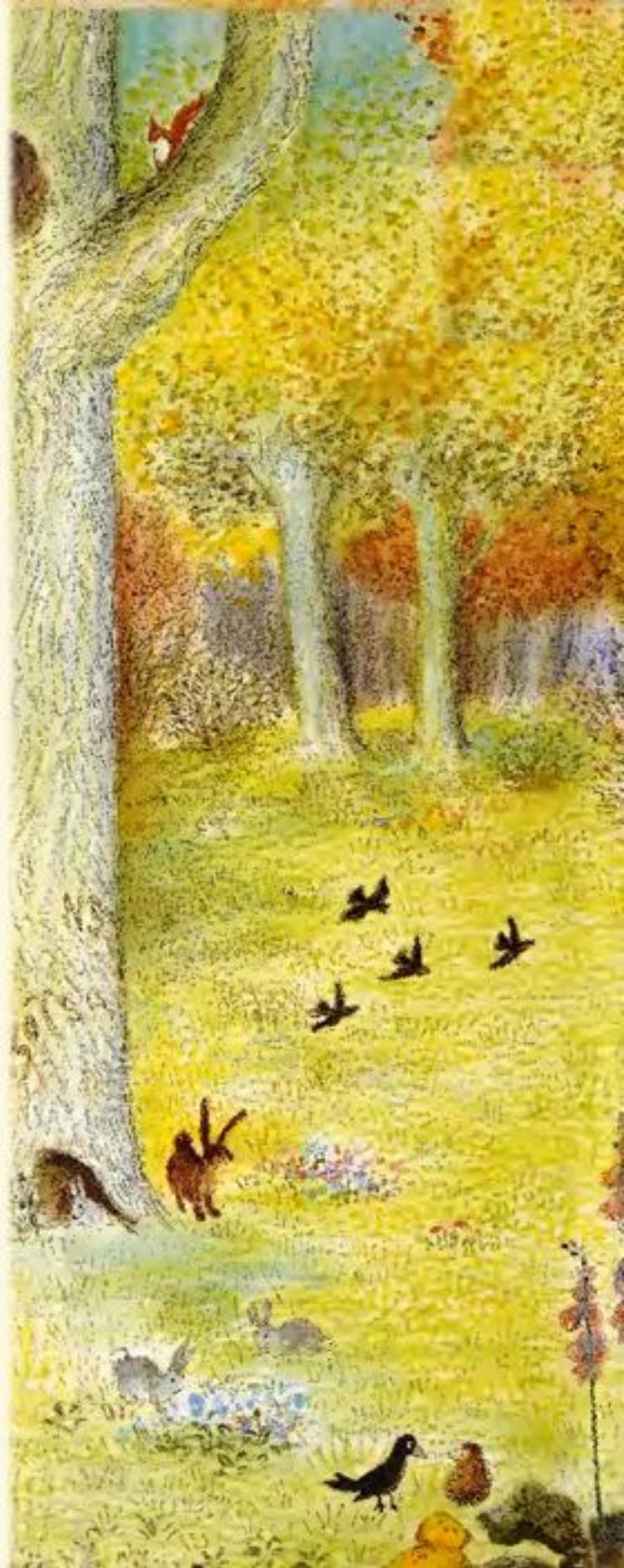
छोटा भाई

और छोटी बहन

एक दिन छोटे भाई ने छोटी बहन का हाथ पकड़ा और कहा, “जिस दिन हमारी माँ का निधन हुआ उसी दिन से हम दुःखी हैं. हमारी सौतेली माँ हर दिन हमें पीटती है और जब हम उसके निकट जाते हैं वह ठोकर मार कर हमें दूर भगा देती है. हर दिन बासी, सख्त रोटी ही हमें खाने को मिलती है. मेज़ के नीचे बैठा कुत्ता भी हम से अधिक खुश है-वह कभी न कभी कोई स्वादिष्ट चीज़ उसे खाने को दे देती है. काश, हमारी माँ यह सब जानती! चलो, हम यहाँ से चलते हैं और बाहर संसार में अपना भाग्य आज़माते हैं.”

अत: वह सारा दिन चलते रहे, खेतों और घाटियों के पार, चट्टानों के ऊपर भी. और जब वर्षा होने लगी तो छोटी बहन ने कहा, “ईश्वर और हमारे हृदय एक साथ रो रहे हैं!”

शाम के समय वह एक विशाल जंगल में पहुँच गए. अपनी लंबी यात्रा के बाद वह इतने थक गए थे कि एक खोखले पेड़ में बैठते ही वह गहरी नींद सो गए.

अगले दिन जब वह नींद से जागे तो आकाश में सूरज बहुत ऊपर आ चुका था. "छोटी बहन, मुझे बहुत प्यास लगी है," छोटे भाई ने कहा. "मुझे कहीं पानी बहने की आवाज़ सुनाई दे रही है. अगर मैं वह झरना ढूँढ़ लूँ तो उसका पानी पी सकता हूँ."

छोटा भाई खड़ा हुआ और उसने छोटी बहन का हाथ पकड़ लिया और दोनों झरने की खोज में चल पड़े. लेकिन उनकी सौतेली माँ एक जादूगरनी थी. और एक जादूगरनी के समान वह गुप्त रूप से बच्चों का पीछा कर रही थी. उसने जंगल के सारे झरनों पर जादू कर दिया था.

बच्चे एक झरने के निकट पहुँचे. पत्थरों पर बहता उसका पानी झिलमिला रहा था. छोटा भाई पानी पीने ही वाला था कि छोटी बहन ने पानी में एक आवाज़ सुनी, "अगर तुम ने मेरा पानी पिया तो तुम बन जाओगे बाघ; अगर तुम ने मेरा पानी पिया तो तुम बन जाओगे बाघ."

"यह पानी नहीं पीना, छोटे भाई!" छोटी बहन चिल्लाई. "अगर ऐसा किया तो तुम एक जंगली जानवर बन जाओगे और मेरे टुकड़े-टुकड़े कर दोगे."

यद्यपि वह बहुत प्यासा था, छोटे भाई ने पानी नहीं पिया. "जब तक कोई और झरना नहीं मिल जाता मैं प्रतीक्षा करूँगा."

अगले छोटे झरने पर छोटी बहन ने पानी में दूसरी आवाज़ सुनी, "अगर तुम ने मेरा पानी पिया तो तुम बन जाओगे भेड़िया; अगर तुम ने मेरा पानी पिया तो तुम बन जाओगे भेड़िया."

"ओह, छोटे भाई, कृपया यह पानी न पीना!" छोटी बहन चिल्लाई. "अगर ऐसा किया तो तुम भेड़िया बन जाओगे और मुझे खा जाओगे."

तब भी छोटे भाई ने पानी नहीं पिया. “जब तक हमें कोई और झरना नहीं मिल जाता मैं प्रतीक्षा करूँगा,” उसने कहा, “लेकिन फिर चाहे तुम कुछ भी कहो, मैं वहाँ पानी पियूँगा क्योंकि मुझे बहुत प्यास लगी है.”

जब वह तीसरे झरने के पास पहुँचे, छोटी बहन ने पानी में एक आवाज़ सुनी, "अगर तुम ने मेरा पानी पिया तो तुम बन जाओगे हिरण; अगर तुम ने मेरा पानी पिया तो तुम बन जाओगे हिरण."

"ओह, छोटे भाई, कृपया यह पानी न पीना!" छोटी बहन चिल्लाई. "अगर ऐसा किया तो तुम हिरण बन जाओगे और मुझे से दूर भाग जाओगे."

लेकिन छोटा भाई पहले ही झरने के निकट बैठ गया था, उसने अपना सिर झुकाया और झरने का पानी पीने लगा. जैसे ही उसके होंठों ने पानी को छुआ वह हिरण बन गया.

छोटी बहन फूट-फूट कर रोने लगी और छोटा हिरण भी रोने लगा.

आखिरकार लड़की ने कहा, "चुप हो जाओ, छोटे हिरण. मैं तुम्हारा साथ कभी न छोड़ूँगी."

फिर उसने मोज़े बाँधने की सुनहरी पट्टी खोल ली और उसे हिरण के गले पर बाँध दिया. उसने कुछ बेलें इकट्ठी कर लीं और उनको लपेट कर एक नरम से रस्सी बना ली और हिरण को उस से बाँध लिया. उसे साथ लेकर वह जंगल के अंदर, बहुत अंदर चली गई.
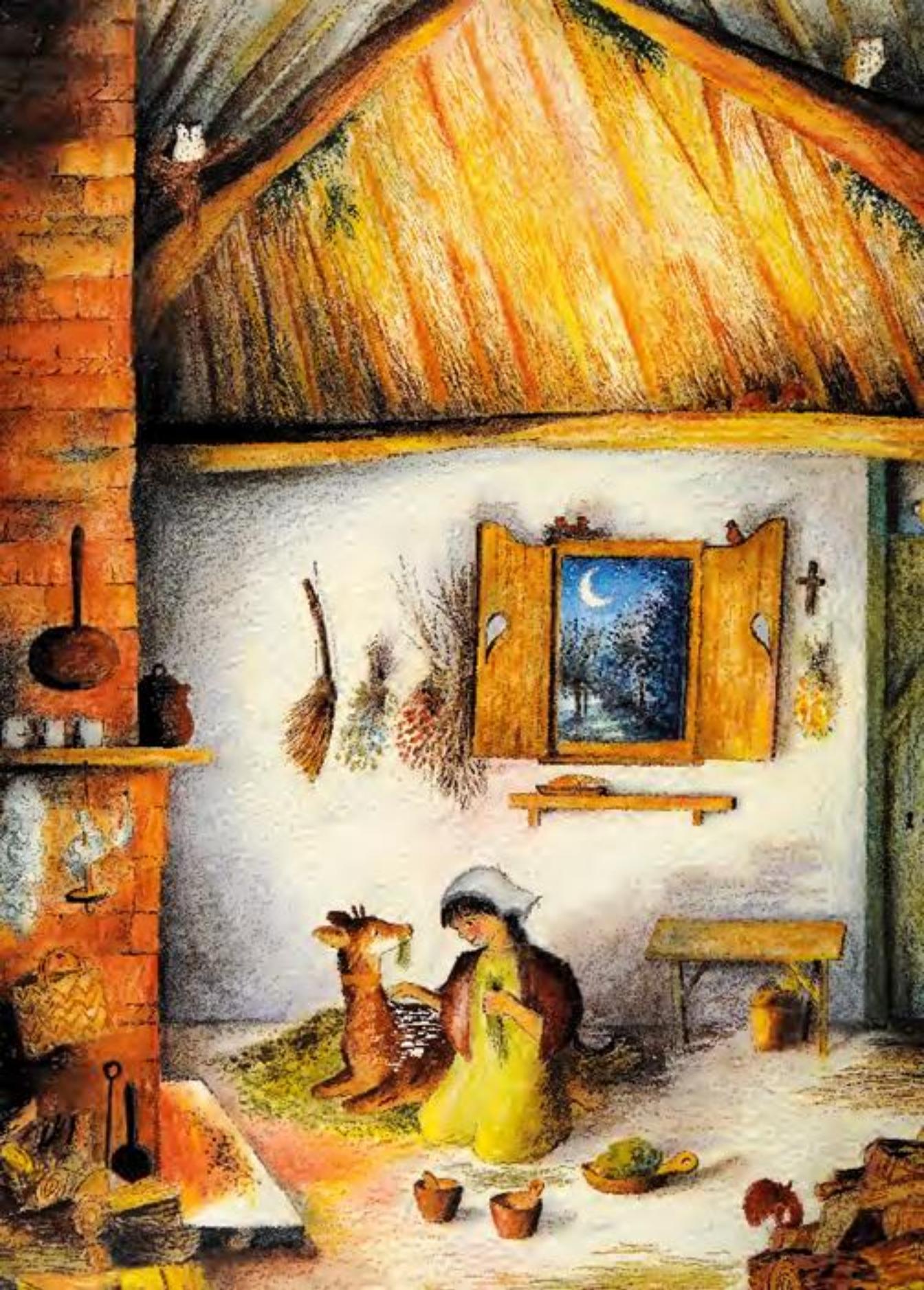
आखिरकार, दूर, बहुत दूर तक चलने के बाद वह एक छोटे से घर के पास पहुँचे. लड़की ने घर के अंदर देखा और उसे खाली पाया. हम इस घर में रह सकते हैं, उसने सोचा. फिर उसने पत्ते और डालियाँ इकट्ठी कर के हिरण के लिए एक नरम बिस्तर बना लिया.

हर दिन सुबह-सवेरे घर से बाहर जाकर लड़की अपने लिए मूल, बेर और नट्स और हिरण के लिए नरम घास इकट्ठी कर लेती. छोटा हिरण लड़की के हाथ से घास खाता और उसके आसपास खेलता रहता.

शाम के समय, जब छोटी बहन प्रार्थना कर लेती, तब वह छोटे हिरण की पीठ पर सिर रख कर गहरी नींद सो जाती. इस तरह वह अकेले जंगल में लंबे समय तक रहे, अगर छोटा भाई अपने असली रूप में होता तो वह दोनों बहुत प्रसन्न होते.

एक दिन उस देश के राजा ने उस जंगल में शिकार का विशाल आयोजन किया. भोंपुओं की आवाज़ें, कुत्तों के भौंकने और शिकारियों के प्रसन्नता से चीखने-चिल्लाने का शोर पेड़ों की बीच गूँजने लगा. यह हो-हल्ला सुन कर छोटे हिरण के मन में शिकार देखने की इच्छा हुई.

“ओह, मुझे बाहर जाने दो,” उसने छोटी बहन से कहा. वह तब तक निवेदन करता रहा जब तक कि वह मान नहीं गई.

“लेकिन तुम्हें शाम तक लौट आना होगा,” उसने हिरण से कहा. “इन असभ्य शिकारियों के भय से मैं घर का दरवाज़ा बंद रखूँगी. लौट कर दरवाज़ा खटखटाते हुए तुम कहना, ‘छोटी बहन, मुझे अंदर आने दो.’ अगर तुम ने ऐसा नहीं कहा तो मैं दरवाज़ा नहीं खोलूँगी.”

छोटा हिरण कूद कर घर से बाहर आ गया. खुली हवा में आकर वह बहुत प्रसन्न था. राजा और उसके शिकारियों ने उस सुंदर हिरण को देख लिया और उसके पीछे भागे. हर बार जब लगता कि वह हिरण को पकड़ लेंगे, वह कूद कर भाग जाता और झाड़ियों में गायब हो जाता.
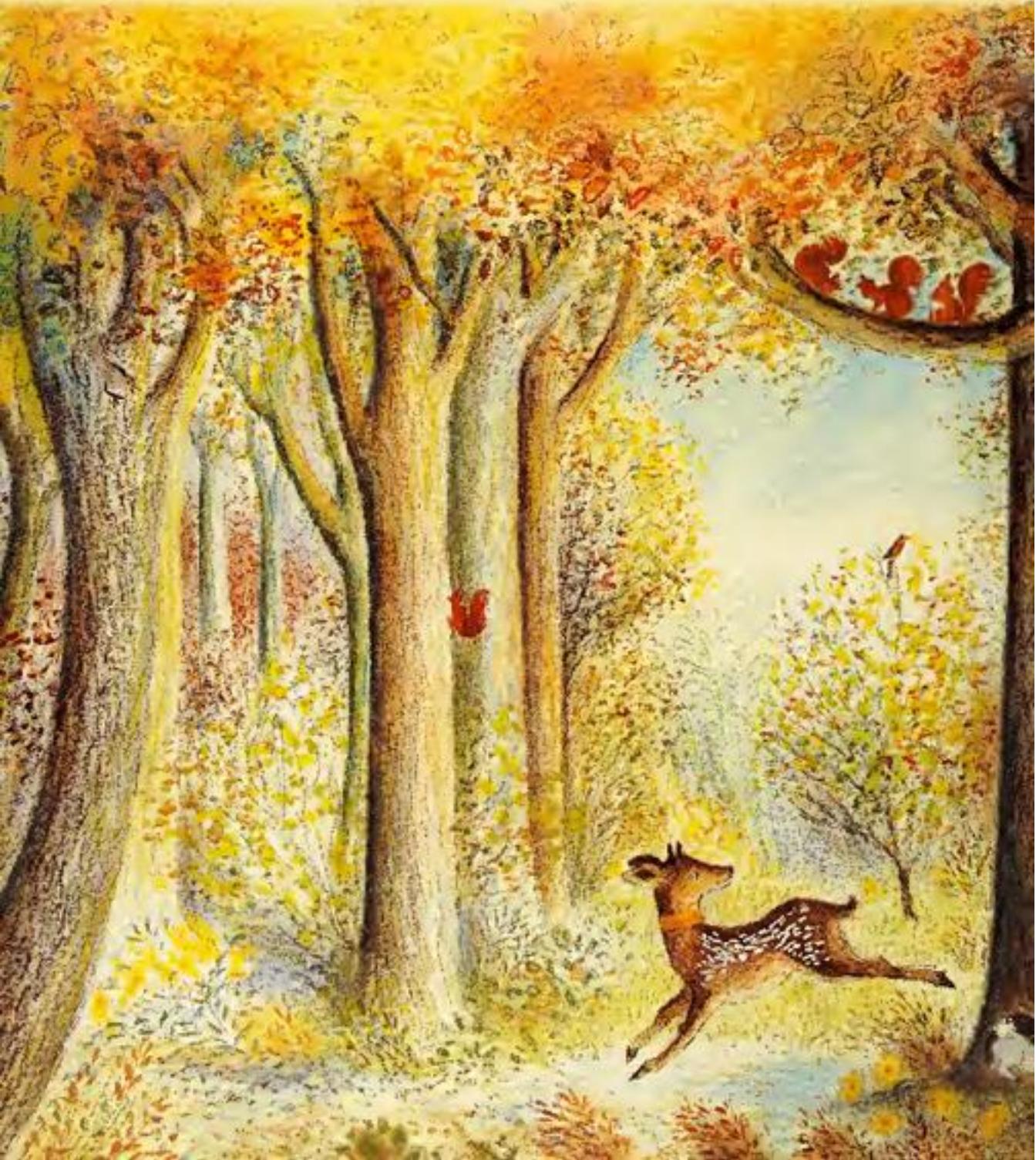
जब अँधेरा हुआ तो हिरण छोटे घर की ओर भागा. उसने दरवाज़ा खटखटाया और कहा, “छोटी बहन, मुझे अंदर आने दो.”

दरवाज़ा खुल गया और वह अंदर चला गया. अपने नरम बिस्तर में लेट कर उसने सारी रात आराम किया.
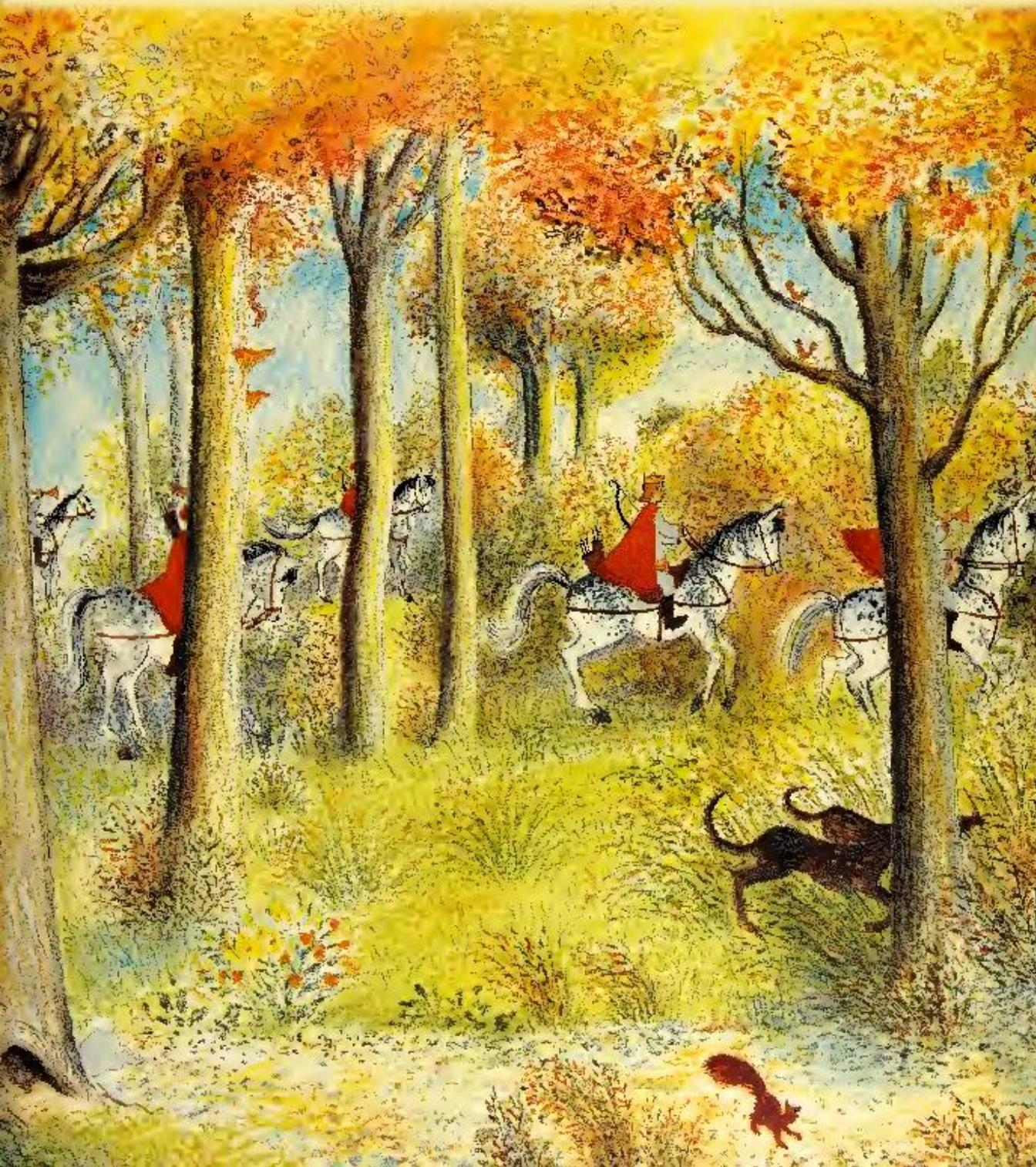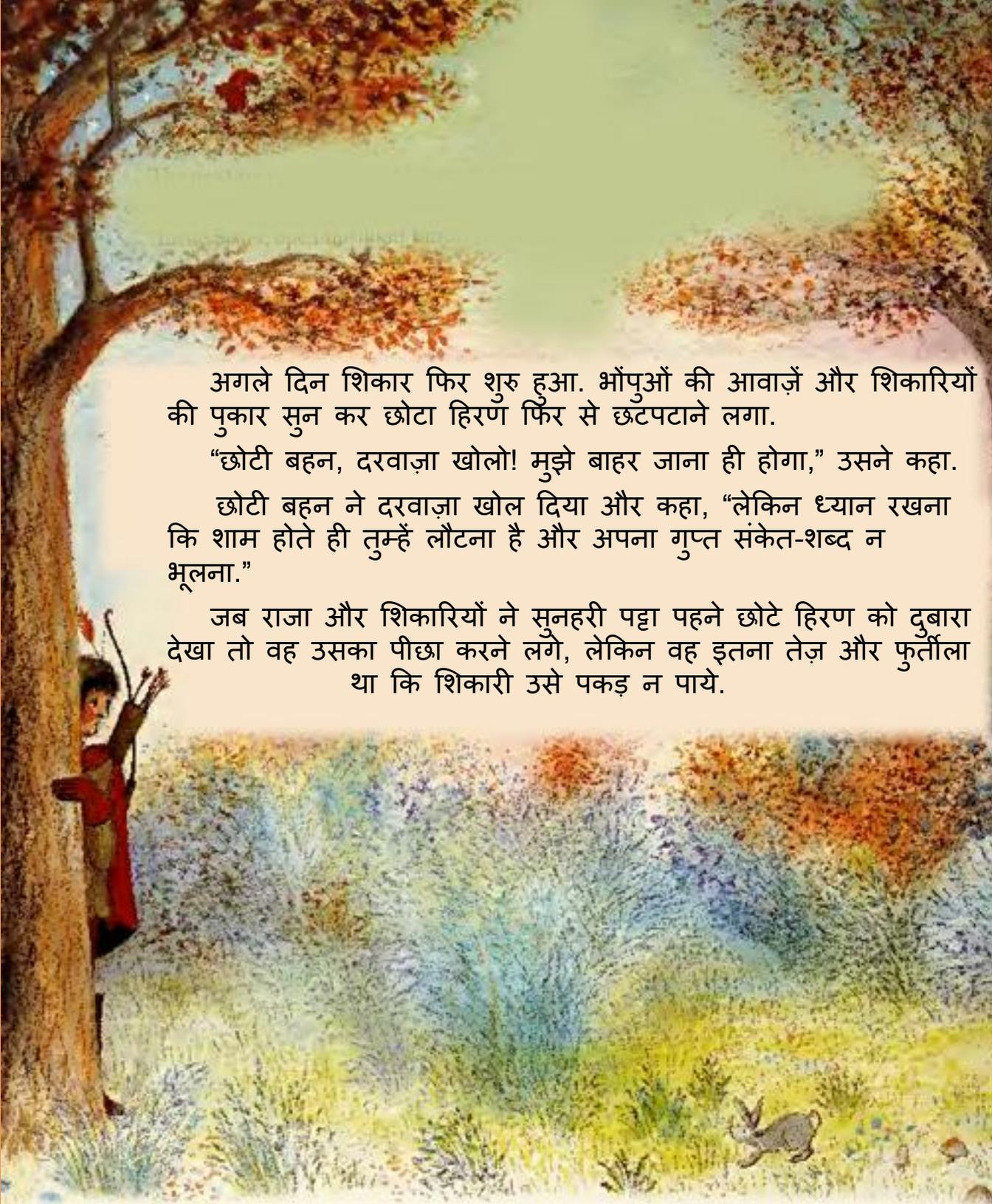
अगले दिन शिकार फिर शुरु हुआ. भोंपुओं की आवाज़ें और शिकारियों की पुकार सुन कर छोटा हिरण फिर से छटपटाने लगा.

“छोटी बहन, दरवाज़ा खोलो! मुझे बाहर जाना ही होगा,” उसने कहा.

छोटी बहन ने दरवाज़ा खोल दिया और कहा, “लेकिन ध्यान रखना कि शाम होते ही तुम्हें लौटना है और अपना गुप्त संकेत-शब्द न भूलना.”

जब राजा और शिकारियों ने सुनहरी पट्टा पहने छोटे हिरण को दुबारा देखा तो वह उसका पीछा करने लगे, लेकिन वह इतना तेज़ और फुर्तीला था कि शिकारी उसे पकड़ न पाये.

वह सारा दिन उसका पीछा करते रहे जब शाम होने लगी तो शिकारियों ने उसे घेर लिया. एक शिकारी ने छोटे हिरण का एक पाँव थोड़ा सा ज़ख्मी कर दिया जिस कारण वह लंगड़ाने लगा. अब वह तेज़ न भाग सकता था.

एक शिकारी चालाकी से उसके पीछे चलता रहा. छोटे घर पहुँच कर उसने हिरण को कहते सुना, “छोटी बहन, मुझे अंदर आने दो.” शिकारी ने दरवाज़ा खुलते और फिर झट से बंद होते हुए देखा. वह राजा के पास आया और उसे सारी घटना के बारे में बताया.

यह देख कर कि छोटा हिरण घायल था, छोटी बहन बहुत डर गई. उसने घाव को धो कर, उस पर कुछ औषधि लगा दी और फिर कहा, "जाओ अपने बिस्तर में लेट जाओ, मेरे छोटे हिरण."

परंतु वह घाव इतना हल्का था कि अगली सुबह छोटे हिरण को कोई दर्द नहीं हो रहा था और जब उसने फिर शिकारियों की आवाज़ें सुनी तो वह बोला, "मेरे लिए घर के अंदर रहना असंभव है! मुझे बाहर जाकर शिकार देखना ही होगा. वह मुझे दुबारा पकड़ नहीं पायेंगे."

छोटे बहन रोने लगी और उसने कहा, "वह तुम्हें मार डालेंगे और मैं जंगल में अकेली रह जाऊँगी. मैं तुम्हें बाहर नहीं जाने दूँगी!"

"फिर दुःख से मैं यहीं मर जाऊँगा," छोटे हिरण ने कहा. "जब मैं शिकारियों के भोंपू की आवाज़ सुनता हूँ तो मैं बाहर जाने को अधीर हो जाता हूँ!"

छोटे बहन ने देखा कि वह कुछ भी न कर सकती थी, इसलिए भारी मन से उसने दरवाज़ा खोल दिया और छोटा हिरण प्रसन्नता से जंगल में भाग गया, वह बहुत स्वस्थ महसूस कर रहा था. जब राजा ने उसे देखा तो उसने अपने शिकारियों से कहा, "उस हिरण का रात होने तक पीछा करो, लेकिन ध्यान रखना कि कोई उसे घायल न करे."

सूर्यास्त के समय राजा ने उस शिकारी को, जिसने उसका पीछा किया था, जंगल में छोटा घर उसे दिखाने को कहा. उस घर के दरवाज़े के निकट आकर उसने खटखटाया और कहा:

"छोटी बहन, मुझे अंदर आने दो!" दरवाज़ा खुल गया और द्वार पर राजा ने एक इतनी सुंदर लड़की देखी जैसी उसने अब तक न देखी थी.

जब छोटी बहन ने छोटे हिरण के बजाय, सिर पर सोने का मुकुट पहने, एक व्यक्ति को दरवाज़े पर देखा तो वह डर गई. लेकिन राजा ने बड़े प्यार से उसे देखा, उससे हाथ मिलाया और कहा, “क्या मेरे साथ मेरे महल में चलोगी और मेरी प्रिय पत्नी बनोगी?”

“ओह, हाँ,” लड़की ने उत्तर दिया, “लेकिन यह हिरण भी मेरे साथ आयेगा, मैं इसको छोड़ नहीं सकती.”

“वह सदा तुम्हारे साथ रहेगा और उसे कभी किसी चीज़ की कमी न होगी,” राजा ने कहा.

तभी छोटा हिरण भागता हुआ आया और छोटी बहन ने बेल से बनाई रस्सी के एक सिरे से उसे बाँध दिया. रस्सी का दूसरा सिरा लड़की ने स्वयं पकड़ लिया और दोनों जंगल में स्थित छोटे घर से एक साथ चल दिये. राजा ने सुंदर लड़की को अपने घोड़े पर बिठा लिया और उसे अपने महल में ले आया. वहाँ बड़ी धूमधाम से उनका विवाह हुआ. अब वह एक रानी थी. राजा और रानी ने प्रसन्नता से कई वर्ष एक साथ बिताये. छोटे हिरण की खूब देखभाल होती थी और वह महल के बगीचों में खेलता रहता था.

उनकी दुष्ट सौतेली माँ, जिसकी निर्दयता के कारण बच्चे घर छोड़ कर जंगल में चले गए थे, ने सोचा था कि जंगल में जंगली जानवर छोटी बहन के टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे और छोटे भाई, जो जादू से हिरण बन गया था, को शिकारी मार डालेंगे. लेकिन जब उसे पता चला कि दोनों बच्चे कुशल और प्रसन्न थे, उसे ईर्षा होने लगी जिस कारण वह दुःखी रहने लगी. वह हर समय यही सोचती रहती कि वह उन बच्चों को कैसे दुबारा क्षति पहुँचा सकती थी.

उसकी अपनी बेटी, जो बहुत कुरूप थी और एक आँख से कानी थी, माँ से नाराज़ थी. उसने कहा, "मैं रानी क्यों नहीं बन पाई? मैं भी उतनी ही योग्य हूँ!"

"चुप," वृद्ध औरत ने उसे तसल्ली देते हुए कहा, "उचित समय आने पर मैं एक योजना बनाऊँगी."

समय बीता और रानी ने एक सुंदर छोटे लड़के को जन्म दिया. जब बच्चे का जन्म हुआ उस समय राजा शिकार करने गया हुआ था. दुष्ट सौतेली माँ ने दासी का रूप बनाया और उस कमरे में आई जहाँ रानी बिस्तर में लेटी हुई थी. उसने रानी से कहा, "चलो, तुम्हारे स्नान का प्रबंध हो गया है. नहा कर तुम्हें अच्छा लगेगा और शरीर में स्फूर्ति आएगी. लेकिन जल्दी करो, कहीं पानी ठंडा न हो जाए."

उसकी बेटी भी उसके साथ थी और रानी को, जो बहुत कमज़ोर थी, दोनों उठा कर स्नानघर ले आए और उसे टब में लिटा दिया. फिर उन्होंने दरवाज़ा बाहर से बंद कर दिया और चली गईं. परंतु जाने से पहले उन्होंने स्नानघर में धधकती आग जला दी थी जिस कारण सुंदर रानी का दम घुटने लगा.
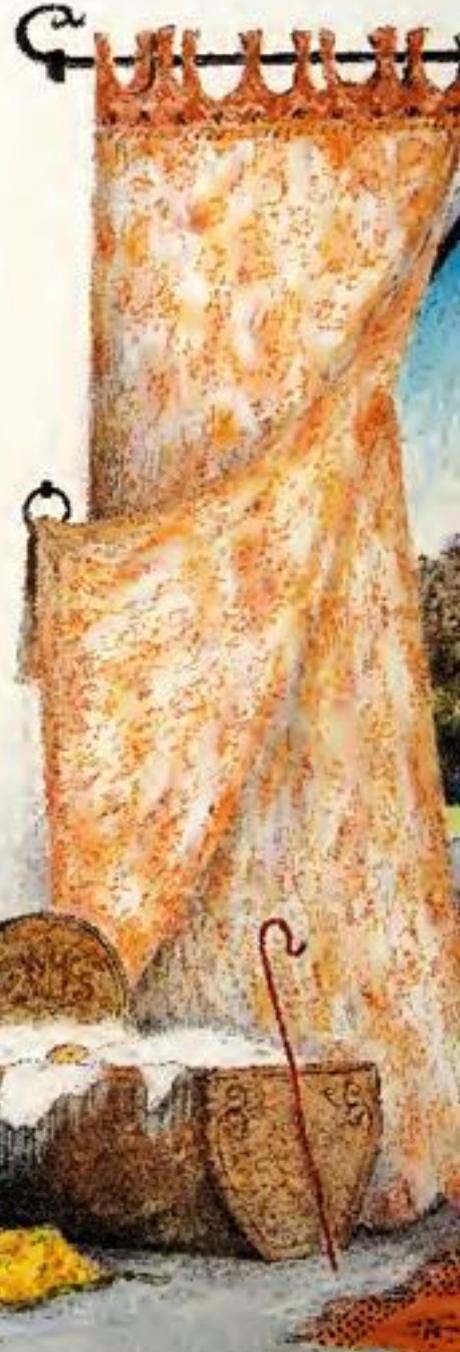
फिर वृद्ध जादूगरनी अपनी बेटी को रानी के कमरे में ले गई, उसे सिर पर एक टोपी पहना दी और रानी के बिस्तर में लेटने के लिए कहा. उसने बेटी का चेहरा और रूप रानी जैसा बना दिया; कानी आँख को छोड़ कर वह रानी ही दिखती थी. जादूगरनी कानी आँख का कुछ न कर सकती थी इसलिए उसने अपनी कुरूप बेटी से कहा कि वह उस तरफ लेटे जिधर उसकी आँख न थी ताकि राजा को उस बात का पता न चले.

उस रात जब राजा घर वापस आया तो उसे पता चला कि उसके बेटे का जन्म हुआ था. वह बहुत प्रसन्न हुआ. यह जानने के लिए कि वह कैसी थी, वह झटपट अपनी रानी के पास आया.

लेकिन वृद्ध जादूगरनी तुरंत चिल्लाई, “परदे न हटाइये! रानी को विश्राम की आवश्यकता है.”

राजा लौट गया और उसे पता ही न चला कि बिस्तर में असली रानी न थी.

आधी रात के समय जब महल में सब सो रहे थे, नर्सरी में पालने के पास बैठी दाई ने देखा कि कमरे का दरवाज़ा खुल रहा था. असली रानी नर्सरी के अंदर आई. उसने पालने में सोये बच्चे को उठाया और उसे दूध पिलाने लगी. फिर उसने उसके सिरहाने को हिलाया और बच्चे को पालने में लिटा दिया और छोटे कंबल से उसको ढक दिया. वह छोटे हिरण को भी न भूली. वह कोने में उसके पास गई और उसकी पीठ को सहलाया. फिर बिना कुछ कहे वह वहाँ से चली गई.

अगली सुबह दाई ने पहरेदारों से पूछा कि क्या रात में कोई महल के अंदर आया था.

"नहीं, हम ने किसी को अंदर आते नहीं देखा," वह बोले.

रात दर रात असली रानी महल में वापस आती पर वह एक शब्द भी न बोलती. दाई उसे हमेशा देखती, लेकिन किसी को कुछ कहने का साहस वह न कर पाई.

कुछ समय बाद, एक रात असली रानी ने कहा, “मेरा बच्चा कैसा है? मेरा हिरण कैसा है? दो बार और यहाँ आने के बाद मैं फिर कभी न आऊँगी.”

दाई ने कोई उत्तर न दिया, लेकिन रानी के जाने के बाद वह राजा के पास गई और उसे सारी बात बता दी.

“इसका क्या अर्थ हो सकता है?” राजा ने कहा. “कल रात मैं स्वयं बच्चे के पास निगरानी करूंगा.”

अगले दिन शाम के समय राजा नर्सरी में आ गया. आधी रात के समय असली रानी आई और बोली, “मेरा बच्चा कैसा है? मेरा हिरण कैसा है? एक बार और यहाँ आने के बाद मैं फिर कभी न आऊँगी.”

फिर सदा की भांति उसने बच्चे की देखभाल की और गायब हो गई. राजा उससे बात करने की हिम्मत न कर पाया. लेकिन अगली रात भी वह बच्चे की निखरानी करता रहा. इस बार रानी ने कहा, “मेरा बेटा कैसा है? मेरा हिरण कैसा है? अब मैं कभी यहाँ न आऊँगी.”

राजा अपने को रोक न पाया. वह भाग कर उसके पास आया और बोला, “तुम मेरी प्रिय रानी हो!”

“हाँ, मैं सच में तुम्हारी प्रिय रानी हूँ,” उसने कहा और उसी पल वह जीवन में वापस लौट आई, वह पहले जैसी सुंदर और स्वस्थ हो गई. फिर उसने राजा को बताया कि दुष्ट जादूगरनी और उसकी बेटी ने उसके साथ कैसा बुरा व्यवहार किया था.

राजा ने दोनों के विरुद्ध मुकदमा चलाया और उनको दंडित किया. जादूगरनी की बेटी को जंगल के अंदर ले जाकर छोड़ दिया गया, जहाँ जंगली जानवरों ने उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये और जादूगरनी को आग में जला दिया गया. जब वह जल कर पूरी तरह भस्म हो गई तो छोटे हिरण का जादू खत्म हो गया और वह फिर से लड़का बन गया.

इस तरह छोटा भाई और छोटी बहन सदा एक साथ प्रसन्नता से रहे.

समाप्त